5:24 PM 0.3KB/s 4G 3G 30
8 b l j Pavitra cha...

शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 दिसंबर 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

पवित्र चरित्र बल से सात्विक व्यक्तित्व निर्माण

प्रो. बनवारी लाल जैन
विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग
जैन विश्वभारती संस्थान
(मान्य विश्वविद्यालय)
लाडनूं, नागौर, राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

जैसे एक इमारत की मजबूती उसकी नींव से आंकी जाती है, उसी तरह एक इंसान अपने चरित्र से पहचाना और सराहा जाता है। कोई भी इंसान अच्छे-बुरे चरित्र के साथ पैदा नहीं होता है लेकिन मरता है तो अच्छे-बुरे चरित्र के साथ मरता है। हर व्यक्ति का चरित्र पवित्र होता है, लेकिन वातावरण के साथ अच्छा और बुरा बन जाता है। प्रस्तुत शोध पत्र में पवित्र चरित्र बल से सात्विक व्यक्तित्व निर्माण पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

चरित्र गुण, ज्ञान व आत्मानुशासन से निर्मित होता है। चरित्र को हम स्त्री-पुरूष के संबंधों तक ही सीमित मानकर चलते हैं, जबकि चरित्र इस छोटे से दायरे में ही नहीं बंधा हुआ है। जब इंसान इन सम्बन्धों को बाहरी ढंग से निभाता है तो चरित्रहीन समझा जाता है और अन्तर्मन विषय-वासना से भरा होता है तब उसे चरित्रवान समझते हैं। लोभ-लालच में आसक्त होकर धूर्तता से लोगों के साथ कपट करने लगता है तब वह चरित्रहीन बन जाता है। दोहरे जीवन जीने वाले व्यक्ति पाखण्डी होते हैं। अपने सरल जीवन को अपराध प्रवृत्ति में जोड़ लेते हैं तो वे समाज में अपना मुंह दिखाने लायक नहीं रह पाते हैं। समाज में उनका चरित्र अपराध बोध के रूप में दृष्टिगोचर होता है। लालच और असत्य बोलने से भी चरित्र प्रभावित होता है। महत्वाकांक्षी होना बुरा नहीं है, परन्तु इसकी दिशा क्या है और उसे किन साधनों से पूरा किया जा रहा है, उससे व्यक्ति का चरित्र निर्धारित होता है। उज्जवल चरित्र की निर्मिति के लिए अत्यंत सजगता और सावधान रहने की आवश्यकता होती है।

सात्विक व्यक्तित्व

चरित्र शब्द मनुष्य के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को प्रकट करता है। चरित्र की उज्ज्वलता से अपनी पहचान सद्पुरूष के रूप में की जा सकती है। कोई भी व्यक्ति अच्छे या बुरे चरित्र के साथ पैदा नहीं होता। वह अच्छी या बुरी परिस्थिति में पैदा हो सकता है। वही उसके चरित्र पर प्रभाव डालती है। कई बार तो कोई घटना ही उसके चरित्र का नाश कर देती है। यथा अपराधवृत्ति में पकड़े गये व्यक्ति का चरित्र समाज में विकृत चरित्र के रूप में पहचाना जाता है। मानसिक प्रतिक्रियाएं चरित्र का निर्माण करती हैं। कोई भी परिवार, विद्यालय, पड़ोस, समाज, देश व राष्ट्र सार्वजनिक सर्वहितकारी व निःस्वार्थकारी भावनाएं को छोड़कर अविश्वास, भ्रष्टाचार, वैमनस्य, असत्य, अशांति, बलात्कार, अपराध तथा उन्माद जनित